जल : मानवता की अतृप्त प्यास

(Water : Unquenchable thirst of Mankind)

संपादक

संतन कुमार राम

प्रकाशक

रचनाकार पब्लिशिंग हाउस

दिल्ली-110093

प्रकाशक

रचनाकार पब्लिशिंग हाउस
डी-18, गली नं. 9, जगतपुरी विस्तार,
शाहदरा, दिल्ली-110093
मो.: 9839977133, 9910143493

© संतन कुमार राम

मूल्य : 850.00

ISBN : 978-93-87932-44-9

प्रथम संस्करण : 2020

अक्षरान्वयन : रमेश कम्प्यूटर्स, दिल्ली

मुद्रक : आशीष प्रिंटर्स, दिल्ली-110093.

भारतीय संस्कृति और गंगाः तृप्ति से मुक्ति तक

सविता भारद्वाज

प्राचार्य–राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर, उ.प्र.

विश्व की प्राचीनतम जीवन्त संस्कृति के रूप में समादृत भारतीय संस्कृति उदारचेता है। यह समूची वसुधा को अपना कुटुम्ब मानती है। मातृ भूमि की वन्दना करती है। भूमि को माँ की तरह पूजती है इसके जन माता भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्या का गायन करते हैं। इसमें कण-कण में उस असीम का दर्शन किया जाता हैं। यह समस्त सृष्टि के प्रति ममत्व और सम्वेदना का भाव रखती है। सभी में अपनत्व का बोध रखती है इसमें मानव की गरिमा उसके कल्याण के साथ-साथ जीव, जगत, वनस्पति, पादप पुष्प सभी के प्रति करुणा और स्नेह का भाव है। यह प्राकृतिक शक्तियों को पूजती है। उसके साथ आत्मीय सम्बन्ध की संवाहिका है। यह सूर्य, चन्द्र, मारूत, अग्नि, वनस्पति, नदी, सबके प्रति अगाध आस्था रखती है। उनकी सुरक्षा और संरक्षण करती है। भारतीय संस्कृति के वैशिष्ट्य की गाथा से पूर्व यह अपेक्षित है कि संस्कृति शब्द की शास्त्रीय व्याख्या प्रस्तुत् की जाए।

संस्कृति की शाब्दिक अवधारणा–छान्दोग्य उपनिषद् में संस्कृति शब्द की अभिव्यंजना निम्नवत हैं–कस्यापि देशस्य समाजस्य का विभिन्न जीवन व्यापारेषु सामाजिक सम्बन्धेषु वा मानवीयत्वदृष्टया प्रेरणा प्रदानां तत्वदर्शाना समष्टिरेव संस्कृति...। वस्तुतस्तस्यामेव सर्वस्यापि सामाजिक जीवनस्योत्कर्षः पर्यवस्यति। तदैव तुलया विभिन्न सभ्यतानामत्कषपिकषो मीयेते। किं बहुना संस्कृतिरेव वस्तुतः सेतुर्विधृतिरेषां लोकानाम सम्भेदाया इत्येव वर्णपितुं शक्यते। अतरूप च सवैषां धर्मानां सम्प्रदायानामा चारणां च परस्पर समन्वयः संस्कृतिरेवाधारेण कर्तु शक्यते। अभिप्रेत ये है कि भी राष्ट्र या समाज के विविध जीवन व्यापारों में अथवा सामाजिक सम्बन्धों में मानवीय प्रेरणा प्रदान करने वाले तत्तद् आदर्शो के समूह को संस्कृति की संज्ञा दी जा सकती

छेम की छहर गंगा रावरी लहर—गंगा जीवनदायिनी है, मुक्तिप्रदा है। ये दो शब्द जो गंगा के नामस्मरण के साथही मूर्तिमान हो उठते हैं। गंगा जल अतृप्त प्यास की पूर्ण तृप्ति हैं। गंगा के नाम का स्मरण मात्र से पाप-ताप संताप सब मिट जाते है। गंगा पर लाखों लोग आश्रित हैं। बहुतों की आजीविका का सबल साधन है। गंगा पर उनकी पूर्ण निर्भरता है। गंगा गांगेयजन की आर्थिक आत्म निर्भरता है। उनकी रोटी है, उनकी रोटी का प्रश्न गंगा से जुड़ा हुआ हैं। यही कारण है कि भारतीय जन मानस तमाम दोषों के बावजूद इस तोष के साथ जीता है कि उसके समस्त कल्याण गंगा धो देगी। प्रायश्चित विधान की एक लम्बी शृंखला गंगा से जुड़ी हुई है। उनके मज्जन और पान से हजार पाप धुल जाते हैं। इस तरह से गंगा एक बहुत बड़े मनोविज्ञानी और मनोचिकित्सक की भूमिका में भी है। जो अवसाद से मुक्त समुदाय की निर्मिति में बड़ी भूमिका का निर्वाह कर रही है। यदि गंगा नहीं तो जीवन की कल्पना कठिन है। मुक्ति का प्रश्न तो द्वैतियक है पहले जीवन की बात है जहाँ जल है वहीं जीवन है और फिर गंगा से सुधारसम जल जो अपने अन्तर में मूल्यवान औषधियों की गुणवत्ता लिए है। गंगा की निर्मलता के साथ-साथ अविरलता का प्रश्न विकराल है। मोक्षदायिनी निर्वन्ध मुक्तिप्रदा हो सकती हैं। करोड़ों लोगो की मुक्ति का प्रश्न अनुत्तरित रह जाएगा यदि गंगा वही तो जीव की बात कैसे होगी जिसकी लहर साक्षात क्षेम की संवाहिका हो जो कलि के समस्त भवबन्धों को काटने वाली हैं, वह सुधामयि गंगा को अपने गौरवमय अतीत की तलाश होने लगी है क्योंकि आज गंगा राष्ट्र नदी होने के बावजूद वह राष्ट्रीय अधिकार नहीं प्राप्त कर सकी है। जिनसे उनकी मुक्ति के साथ-साथ मानव मुक्ति के प्रश्न का सार्थक समाधान हो सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. छान्देग्य उपनिषद 8/4/1
2. प्रबन्ध प्रकाश भाग 2, पृष्ठ 8
3. डॉ. जी.सी. पाण्डेय : भारतीय समाज तात्विक और ऐतिहासिक विवेचन, प्रकाशन—नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली, पृष्ठ 101
4. वही, पृष्ठ 102

5. डॉ. कर्ण सिंह : हिन्दू दर्शन एक सार्वकालीन दृष्टि भारतीय ज्ञानपीठ, पृष्ठ 46, संस्करण-2001
6. डॉ. एन के देवराज : दर्शन धर्म अध्यात्म और संस्कृति, भारतीय ज्ञानपीठ, 2005 इंस्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नई दिल्ली, पृष्ठ 146
7. कूर्म पुराण
8. ऋग् 10.140.8 महादेवी वर्मा, भारतीय संस्कृति के स्वर, राजपाल एण्ड संस, सं. 2008 कश्मीरी गेट, दिल्ली, पृष्ठ 31
9. वही, पृष्ठ 31
10. दैनिक जागरण
11. महादेवी वर्मा सं. के स्वर, पृष्ठ 33
12. गंगालहरी कवि (पद्माकर कृत) सम्पा. सुधाकर पाण्डेय, नागरी प्रचारिणी सभा काशी पु संस्करण वि. सम्वत् 2040, पृष्ठ 2
13. वही पृष्ठ 3
14. वही पृष्ठ 3
15. वही
16. वही
17. वही पृष्ठ 36
18. कविकाल को कहर जग जाल को जहर है।